बी॰ए॰ पार्ट II हिन्दी प्रतिष्ठा
हिन्दी साहित्य के इतिहास का काल विभाजन
डॉ॰ सावित्री चन्द्र पाठक

उपर्युक्त ग्रंथों की विषय वस्तु और उद्देश्यों पर यदि ध्यान दिया जाए तो स्पष्टतः वे सभी अपने-अपने राजाओं और आश्रयदाताओं की प्रशंसा तथा उनकी वीरता का बखान करने से भरे पड़े हैं। यद्यपि इन ग्रंथों की वस्तु में विविधता है किन्तु उनके केन्द्र में आश्रयदाता रहे हैं। यह प्रवृत्ति प्रायः 1350 संवत तक उपलब्ध होती है। यह तो सत्य है कि विवेच्य काल राजनैतिक अस्थिरता एवं युद्धों का काल रहा है। अतः समाज की विशेषताओं और उनकी स्थितियों का चित्रण यदि तत्कालीन साहित्य में उपलब्ध हो तो इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं हो सकती। इन्हीं विशेषताओं के कारण ही संवत 1050 से 1375 संवत तक के काल में समान प्रवृत्ति को देखते हुए इस काल को वीरगाथाकाल या आदिकाल के नाम से संबोधित किया गया है।

इसके बाद हिन्दी साहित्य के इतिहास में एक चमत्कार दिखलायी पड़ता है। डॉ॰ जार्ज ग्रियर्सन इसे बिजली की चमक की तरह देखते हैं जो देखते ही देखते समूचे परिदृश्य पर छा जाती है। यह बात रेखांकित करने योग्य है कि अभी-अभी आदिकाल में आश्रयदाताओं की प्रशंसा हेतु साहित्य रचना हो रही थी किन्तु संवत 1375 आते-आते साहित्य सृजन में गुणात्मक परिवर्तन आ गया और साहित्य का स्वर भक्तिमय हो गया। ऐसा क्यों हुआ इसका विवेचन हर विद्वान अलग-अलग ढंग से करता है। किन्हीं की मान्यता है कि यह पराजित मनःस्थिति से उत्पन्न निर्वेद है जो भक्ति के रूप में विकसित हुआ है। दूसरा पक्ष इसे दक्षिण के आलवार संतों के प्रभाव से पैदा हुआ सशक्त भाव के रूप में देखता है।

कारण चाहे जो भी रहा हो, वस्तुस्थिति यही थी कि साहित्य का स्वर भक्तिभाव से परिपूर्ण हो चुका था। इस काल में भक्त कवियों की बाढ़ सी आ गयी। क्या हिन्दू तथा मुसलमान - सभी भक्ति के प्रवाह में आनन्दमग्न हो रहे थे। रामकाव्यधारा, कृष्णकाव्यधारा, संतकाव्यधारा तथा प्रेमाख्यानककाव्यधारा के विभिन्न आयामों में साहित्यिक रचनाओं को वर्गीकृत किया जा सकता है। इसी काल में गोस्वामी तुलसीदास, सूरदास, कबीरदास, मलिक मुहम्मद जायसी, वल्लभाचार्य, नन्ददास, छीतस्वामी, कुम्भनदास, मंझन, रैदास, सुन्दरदास, मीराबाई प्रमुख साहित्यकारों ने अपनी प्रतिभा और समर्पण तथा भक्तिमय उद्गारों से हिन्दी साहित्य के कोष में अभिवृद्धि की। हिन्दी साहित्य के इतिहास का यह काल संभवतः समस्त कालों से इतर होता जिसमें ~~समाज~~ सामाजिक ~~आदि~~ वास्तविकताओं से सर्वथा भिन्न साहित्य की रचना हो रही थी। भक्ति का यह भाव हिन्दी साहित्य में बहुत बड़े कालखंड में छाया रहा। इसकाल में ही गोस्वामी तुलसीदास ने विनय पत्रिका, कवितावली, गीतावली, रामचरितमानस जैसे श्रेष्ठ काव्य ग्रंथों का सृजन किया। रामचरितमानस हिन्दी साहित्य का, संभवतः विश्व साहित्य का श्रेष्ठतम ग्रंथ है जिसमें साहित्यिक विशेषताओं के साथ ही सामाजिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों का चरम विकास हुआ है। जहाँ विवेचन की यह दृष्टि आश्चर्य होता है कि रामचरितमानस की प्रति समस्त हिन्दू धर्मावलम्बी के घर में अवश्य पायी जाती है। सच पूछा जाए तो रामचरितमानस ने हमारे समाज को सजाने और सवाँरने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। इस ग्रंथ ने हमारे समाज एक ऐसे आदर्श परिवार, आदर्श समाज एवं आदर्श राज्य की परिकल्पना की है जो सुव्यवस्था एवं विकास का चरम बिन्दु है।

इसी प्रकार सूरदास ने कृष्ण के बाल एवं किशोर जीवन का ऐसा सांगोपांग चित्रण किया है कि मन प्रेम एवं भक्ति के सागर में आप्लावित हो जाता है। सूरदास के सम्बन्ध में यह कहा जाता है कि वे जन्मांध थे। किन्तु उनके विपुल साहित्य के अध्ययन से ऐसा प्रतीत नहीं होता। बाल मनोविज्ञान की जैसी सूक्ष्म

notes

Phone

email

website